श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ८

जनवरी 2025

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. शरीर के सभी अवयव हिनाधिक और कुलक्षण हो ऐसी शरीरा कृति .... कहलाती है ।
२. मैं विवाह, मृत्यु एवं गोदभराई आदि के .... मे भाग नहीं लुंगा ।
३. प्रभुशासन को प्राप्त साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं के लिये अवश्य करने के .... बताया है ।
४. जिनका उत्तम शासन जगत को मुक्ति दिलाने में .... है ।
५. अस्थियाँ ही न होने के कारण एकेन्द्रिय..................... होते है ।
६. .... को उत्तेजित करने हेतु विकार सहित वचन बोले हो तो प्रथम कंदर्प नामक अतिचार जानना ।
७. अपने किसी भी कषाय को अनंतानुबंधी होने न देना हो तो भाव पूर्वक .... अवश्य करना चाहिये ।
८. तुझे यह सब विचार करके पुण्य व पाप के........................ के बारे मे शंका करना नहीं ।
९. जीव को पापो से बचाने हेतु..................... की स्थापना की हैं ।
१०. सोम, यम, वरुण और कुबेर ये चार जाति के .... के साथ संबंधित ये देव हैं ।
११. अस्थि रचना की मजबूती और शिथिलता को........................ कहते है ।
१२. कैसा वो धन्य समय ! गुरु के द्वारा चैतन्य के .... में से चैतन्य स्वरुप ज्ञान प्राप्ति .... ।
१३. .... के उदय से जीव बलवान को भी भारी पड जाता हैं ।
१४. जंबूद्वीप के मुख्य सरोवर........................ है और उसमें देव-देवियों का वास हैं ।
१५. जिस कर्म के उदय से शरीर में विविध प्रकार की दुर्गंध प्राप्त होती है, वह.................... है ।
१६. प्रभु महावीरने .... के शुभ दिनको श्री चतुर्विध संघ की स्थापना की ।
१७. आनुपूर्वी का उदय........................ में होता हैं ।
१८. जीवन शुद्ध और..................... बनता है, दुर्गति का भय दूर होता है ।
१९. पापकर्मो से लीपना अर्थात बेवजहा दंडित करना उसे .... कहते हैं ।
२०. जिस शरीर के नाभि के उपर के अवयव हीनाधिक हो और नाभि के नीचे के अवयव सप्रमाण संपूर्ण हो ऐसी शरीर कृति......... कहलाती हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. वर्ष दरम्यान अशुभ योगों से प्रवृत्ति से लौटने की निवृत्तिरुप क्रिया क्या कहलाती है ?
२. सामान्य केवलीओ में श्री अजितनाथ भगवान क्या हैं ?
३. किस नामकर्म का उदय सिर्फ त्रस जीवोको ही होता है ?
४. किसने अपना परिवार सुधर्मास्वामी को सौंप दिया था ?
५. कोई भी कषाय एक साल तक टिक जाय तो वो क्या बनता है ?
६. जो किसी से भी क्षोम नहीं पाते वो कौनसा नामकर्म हैं ?
७. प्रतिक्रमण के महत्व को समझने वाले श्रावक कौन थे ?
८. मुख में से अतिशय वाचाल रुप से असमंजस वचन बोलना किसके अंतरगत आता है ?
९. अपनी मर्यादा से बाहर निकल जाना क्या कहलाता हैं ?
१०. कौनसे देव तिर्यग् जृंभकव्यंतर जाति देव होते हैं ?
११. कौनसा संघयण मनुष्यों तथा पंचेन्द्रिय में ही पाया जाता हैं ?
१२. उखल मूसल, चक्की, गन्ने का रस निकालने के उपकरण किसके अंतर्गत आते हैं ?
१३. इन वेदपदो से किसकी सिद्धी होती हैं ?
१४. चारों समान किनारे वाले शारीरिक संरचना को क्या कहते हैं ?
१५. अहंकार का त्याग कर विनय और नम्रता दर्शन के लिये कौनसा आवश्यक जरुरी हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) सव्वसत्त २) छड्ढा ३) कसिणं ४) अभिराम ५) किण्ह ६) ऊससण ७) सुविक्कमा ८) नियाउ ९) सोलसंग
१०) निडालओहि ११) महुरा १२) तत्तं १३) सीअं १४) तंति १५) संठाणा १६) मक्कड १७) पिडिअयाहिं
१८) खरं १९) नारायं २०) जस्स

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) अनंतानुबंधीन	१) दास	६) आवर्त	६) प्रमाद वश
२) नेत्र	२) नलिन	७) कर्कश	७) सम्मग्दर्शन
३) मल्लयुद्ध	३) श्री देवी	८) निष्फल कर्म	८) हरडे
४) आभियोगिक	४) वप्र	९) पद्मद्रह	९) पत्थर
५) कषाय	५) अनर्थ दंड	१०) सुबाहु	१०) पत्रलेखा

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. स्पर्श नामकर्म कितने प्रकार का है ?
२. विकारमय विचार आने पर कितनी बार मिच्छामिदुक्कडं मांगनेका कहा गया है ?
३. बुद्धिदेवी का निवासस्थान कितने योजन लंबा है ?
४. अचलभ्राता महात्मा कितने कर्म खपाकर केवलज्ञानी बने ?
५. कोईभी कषाय कितने दिन रह जाय तो वह प्रत्याख्याणावरणीय बनता है ?
६. रस नामकर्मकी कितनी प्रकृतियाँ शुभ है ?
७. ऐरावत क्षेत्र कितने विस्तारवाला है ?
८. पौषधशाला मे कितनी आशातनाओ से बचना चाहिये ?
९. वैताढ्यपर्वत पर कितने योजन पर विद्याधर मनुष्यों की श्रेणियाँ है ?
१०. महाविदेह क्षेत्र के बत्तीस विजय कितने योजन विस्तार वाले है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. मृत्यु के पश्चात दूसरे स्थान पर जन्म लेने के लिये आत्मा को आकाश प्रदेश की श्रेणियों पर चलना पड़ता है ।
२. मेरु पर्वत के उत्तर ओर की महाविदेह पर सौधमेन्द्र के लोकपाल के आभियोगिक देवों के रहने के स्थान है ।
३. जिस संघयण में दो अस्थियां आपस में मात्र स्पर्श की हुई हो उसे किलिका संघयण नाम कर्म कहते हैं ।
४. पक्ष दरमियान यदि अशुभ योगों में प्रवृत्ति हुई हो उसे वापिस लौटने की निवृत्तिरुप जो क्रिया की जाती है उसे पक्खी प्रतिक्रमण कहते है ।
५. संज्वलन कषाय देशविरति का घात करता है ।
६. दस में से पांच द्रह सीतोदासे एवं पाँच द्रह सीता नदी से भेदकर दो दो हिस्सों में बंट गये है ।
७. अपनी वंश परम्परा में चलते वेद, वेदान्त का अभ्यास करवा के पिता ने पुत्र को अध्यापक बनाया था ।
८. जीवन के अहंकार का त्याग कर विनय और नम्रता दर्शाने के गुरु-वंदन के लिये यह दूसरा आवश्यक है ।
९. विकलेन्द्रिय को सेवार्त संघयण ही होता है ।
१०. अशुभ कर्मों के द्वारा जीव पुण्यशाली होता है और शुभकर्मो के कारण जीव पापी होता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. इसी तरह साधक अपने जीवन में रहे हुए दोषों को खोज निकालता है।
२. मैं किसी की निंदा नहींकरुंगा, हो जायेगी तो भगवान को १२ खमासमणे दुंगा ।
३. जिस कर्म के उदय से जीव को शरीर का श्वेत वर्ण मिलता है वह श्वेत वर्ण नामकर्म कहलाता है ।
४. आत्मा दंडित हो दुर्गति में दुःख दर्द एवं दुर्भाग्य को पाती रहती है ।
५. आत्म जागृति और आत्म निर्मलता के लिये वह विशिष्ट क्रिया आराधना है ।
६. शरीर कुटुंब आदि के लिये कर्तव्यपालन हेतु जो प्रवृति करने में आये वो अर्थदंड है ।
७. दो अस्थियों में एक तरफ ही मर्कट बंध हो दूसरी तरफ न हो उसे अर्धनाराच संघयण कहते है ।
८. छ खंडवाले इस क्षेत्र पर चक्रवर्ती संपूर्ण विजय प्राप्त करता है ।
९. इससे जहाँ गति छिक हो तब गति और आनुपूर्वी लेना है ।
१०. देवांगनाओं ने नृत्य करके शांतिनाथ प्रभु के अच्छे पराक्रम वाले अथवा अच्छी चालवाले चरणों में वंदना की है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. संस्थान यानि क्या ? न्यग्रोध संस्थान समझाईये ? २) अचलभ्राता की शंका का समाधान प्रभुने कैसे किया ?
३. अनर्थ विरमणव्रत संक्षिप्त में समझाईये ? ४) आभियोगिक देवोंकी श्रेणियों के बारे में लिखिये ?
५. पाँच प्रतिक्रमण किसलिये करना चाहियें संक्षिप्त में समझाईये ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com